प्रातःक्लास 22.3.68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

रिकॉर्डः–इस पाप की दुनियाँ से.....ओमशान्ति। मीठे–2 रूहानी बच्चों ने गीत सुना। जानते हैं यह है पाप की दुनियां। पुरानी दुनियां है पाप की दुनियां। नई दुनियां होती है पुण्य की दुनियां। वहां पाप होता नही। वह है रामराज्य, यह है रावण राज्य। सबसे बड़ा ते बड़ा पाप है काम कटारी चलाना, जो ही आदि मध्य अंत दुःख देती है। तब तो पुकारते हैं हे पतित–पावन आओ, हमको पावन बनाओ। सभी धर्म वाले पुकारते हैं ओ गॉडफादर, आकर हमें लिबरेट करो। गाइड बनो। गोया बाप जब आते हैं तो जो भी धर्म हैं सारी सृष्टि में, सभी को ले जाते हैं। इस समय सभी रावण राज्य में हैं। तो सभी धर्म वाले को ले जाते हैं वापस शान्तिधाम। विनाश तो सभी को होना ही है। भारत, जहां बाप आते हैं उन्हों को ही सुखधाम का लायक बनाते हैं। जो भी बच्चे हैं इस सृष्टि में, सभी का कल्याण करते हैं; इसलिए एक को ही सर्व सद्गति दाता, सर्व का कल्याण करने वाला कहा जावेगा। बाप कहते हैं अभी तुमको वापस जाना है। सभी धर्म वालों को शान्तिधाम वा निर्वाणधाम जाना है। जहां सभी आत्माएं शान्ति में रहती हैं। बेहद का बाप जो रचयिता है वह आकर सभी धर्म वालों को मुक्ति–जीवनमुक्ति देते हैं। तो महिमा भी उस एक गॉड–फादर की गानी चाहिए, जो आकर सभी की सेवा करते हैं। उनको ही याद करना चाहिए। बाप खुद समझते हैं मै दूर देश परमधाम के(का) रहने वाला हूँ; इसलिए मुझे परमपिता कहते हैं। मुझे पुकारते हैं; इसलिए मैं आता हूं। जो भी बच्चे हैं सभी को ले जाता हूं। सबसे पहले जो प्राचीन देवी–देवता धर्म था वह अभी नहीं है। हिन्दु तो धर्म नहीं है। असल है ही देवी–देवता धर्म; परन्तु पवित्र न होने कारण अपन को देवता कहने बदली हिन्दु कह दिया है। हिन्दु धर्म स्थापन करने वाला तो कोई है नहीं। गीता है ही सर्वशास्त्र मई शिरोमणी। भगवान के गाये हुये हैं। भगवान एक को ही कहा जाता है। गॉडफादर। कृष्ण को वा ल.ना. को कब गॉडफादर पतित–पावन नहीं कहेंगे। यह तो राजा–रानी है। इन्हों को ऐसा किसने बनाया? बाप ने। बाप पहले–2 नई दुनियां रचते हैं। जिसके हम मालिक बनते हैं। कैसे बने हैं यह कोई भी मनुष्य मात्र नहीं जानते। बड़े–2 लखपति मन्दिर आदि बनाते हैं। इन्हों से पूछना चाहिए इन्होंने यह विश्व का राज्य कैसे लिया? कैसे मालिक बने? कब कोई बता न सकेंगे। क्या कर्म किये तो इतना फल पाया? अभी बाप बैठ समझाते हैं तुम अपने धर्म को भूल गये हो। आदि सनातन देवी–देवता धर्म को न जानने के कारण सभी और–2 धर्मों में कनवर्ट हो गये हैं। वह फिर रिर्टन होंगे अपने धर्मों में। जो आदि सनातन देवी–देवता धर्म के हैं वह फिर इस अपने ही धर्म में आवेंगे। क्रिश्चयन धर्म का होगा तो फिर क्रिश्चयन में जावेगा। यह अभी आदि सनातन देवी–देवता धर्म का सैम्पलिंग लग रहा है। जो–2 जिस धर्म का है उनको अपने ही धर्म में आना पड़ेगा। यह झाड़ है। इनके तीन ट्युब्स हैं। फिर एन से वृद्धि होते जाते हैं। और कोई यह नॉलेज दे न सके इस विराट झाड़ की। अभी बाप समझाते हैं तुम अपने धर्म में आ जाओ। कोई कहते हैं हम सन्यास धर्म में जाता हूँ। रामकृष्ण परमहंस सन्यासी का फॉलोवर्स हूँ। अभी वह तो हैं निवृत्तिमार्ग वाले। तुम हो प्रवृत्तिमार्ग वाले। वह धर्म ही बिल्कुल अलग है। अभी प्रवृत्तिमार्ग वाले निवृत्तिमार्ग वालों पास जाते हैं वह तो बिल्कुल रांग हैं। गृहस्थी फिर निवृत्ति मार्ग वालों के फॉलोवर्स कैसे बन सकते हैं।अनेक प्रकार के सन्यास हैं। जिनके फॉलोवर्स बने हैं। अभी उन निवृत्तिमार्ग वालों का तो धर्म ही अलग हैं। तुम पहले–2 प्रवृत्तिमार्ग में पवित्र थे। फिर रावण द्वारा तुम अपवित्र बने हो। अभी फिर यह बातें सन्यासी नहीं जानते हैं। बाप समझाते हैं तुम हो गृहस्थ आश्रम के। भक्ति भी तुमको करनी है। बाप आकर भक्ति का फल सद्गति देते हैं। जो पवित्रमार्ग के थे वही अपवित्रमार्ग बने हैं। वह धर्म बिल्कुल अलग है। शंकराचार्य आदि सभी पीछे आते हैं। 2500 वर्ष बाद शंकराचार्य (ने) सन्यास धर्म स्थापन किया। वह है निवृत्तिमार्ग। तुम हो प्रवृत्तिमार्ग वाले। फिर तुम कैसे कहते हो कि हम फलाने के फॉलावर्स हैं। फॉलोवर तब कहा जाये जब तुम भी कफ्नी पहनो। माथा मूंडो। गृहस्थी अपन को सन्यासी का फॉलोवर कहलाये तो यह तो रांग हैं। दुनियां में जो भी होता है वह तो (अन)राइटियस इनसॉलवेन्ट हैं।

अनलॉफुल। राजा कोई है नहीं। इनको सावरन्टी नहीं कहा जाता। इनको कहा जाता है अनराइटियस इरिलीजियस। अनलॉफुल इम्प्योर। अगेन्स्ट है ना। कहा भी जाता है रिलीजन इज़ माइट। बाप रिलीजन स्थापन करते हैं। तुम सारे विश्व के मालिक बनते हो। बाप से तुमको कितनी माइट मिलती है। एक सर्वशक्तिवान बाप ही आकर सभी को शक्ति देते हैं। सर्व की सद्गति करते हैं। और कोई सद्गति देने वाला है नहीं। न कोई सद्गति पा सकते हैं, न दे सकते हैं। यहां ही वृद्धि को पाते रहते हैं। वापस कोई जा नहीं सकता। सद्गति दाता है ही एक। बाप कहते हैं मैं सभी धर्मों का सर्वेन्ट हूँ। आकर सभी की सद्गति करता हूं। सद्गति कहा जाता है सतयुग को। मुक्ति है शान्तिधाम। फादर आते हैं तो आकर सभी धर्मों की सद्गति करते हैं। तो सबसे बड़ा कौन हुआ? बाप कहते हैं हे आत्माएं तुम सभी ब्रदर्स हो। ब्रदर्स को बाप से वर्सा मिलता है। आकर सभी को अपने–2 सेक्शन में भेज देने लायक बनाता हूं। लायक नहीं बनते हैं तो फिर सज़ा खाते हैं। सज़ाएं खाकर हिसाब–किताब चुक्तू कर वापस चले जाते हैं। तो यह है शान्तिधाम ,वह है सुखधाम। बाप कहते हैं मैं आकर न्यू वर्ल्ड स्थापन करता हूं। इसमें मेहनत करनी पड़ती है। बिल्कुल ही अजामिल जैसे पापात्माओं को आकर ऐसा बनाता हूं। जब से तुम वाममार्ग में गये हो तब से सीढ़ी नीचे उतरते आये हो। यह 84 जन्मों की सीढ़ी है उतरने की। सतोप्रधान से सतो, रजो, तमो,.....अभी यह है संगम। बाप कहते हैं मैं आता हूं एक बार। मैं कोई क्राइस्ट, इब्राहिम, बुद्ध के तन में नहीं आता हूं। मैं पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही आता हूं। वह लोग तो कह देते परमात्मा सभी मे व्यापक है। सर्वव्यापी है। यह सभी है झूठ। इनको कहा ही जाता है झूठ–खण्ड। भारत सच्च खण्ड था। तो भक्तिमार्ग में हैं अन्धश्रद्धा ,ब्लाइन्ड–फेथ। सन्यासी का फॉलोवर सन्यासी ही होंगे या गृहस्थी? अभी कहा जाता है फॉलो फादर। बाप कहते हैं तुम सभी आत्माओं को मेरे को फॉलो करना है। मामेकं याद करो तो तुम्हारे पाप कट जावेंगे। इसको कहा जाता है योग–अग्नि। तुम हो सच्चे–2 ब्राह्मण। वह ब्राह्मण लोग तो कोस करने लिए हथियाला बांधते हैं। तुम फिर वह तोड़ते हो। काम चिक्षा से उतर ज्ञान–चिक्षा पर बैठो। वह विष्टा के कीड़े हैं। उनको तुम निकाल ज्ञान की भूं–2 करते हो। वह हैं गन्द खाने वाले। नानक ने भी कहा है असंख्य चोर हराम खोर.....मनुष्य के लिए ही कहा है। यह एक ही बाप बैठ समझाते हैं। क्राइस्ट, बुद्ध, नानक आदि सभी एक को ही याद करते हैं। सभी का फादर वह एक ही है ; परन्तु उनको कोई भी जानते नहीं। अभी तुम आस्तिक बने हो। रचयिता और रचना को तुमने अभी रचयिता बाप द्वारा जाना है। ऋषि–मुनि आदि सभी कहते थे नेती–नेती। हम नहीं जानते तो गोया नास्तिक ठहरे ना। सभी हैं आरफन। कितना लड़ते'–झगड़ते हैं। स्वर्ग में कब लड़ाई–झगड़ा आदि होती नहीं। वह है ही सच्च खण्ड। दुःख का नाम नहीं। यहां आरफन होने कारण कितना दुः,ख है। आयु भी बहुत छोटी है। देवताओं की आयु कितनी बड़ी थी। वह है पवित्र योगी। यहां हैं अपवित्र भोगी। कितना फर्क है। सीढ़ी उतरते आयु कमती होती जाती है। अकाले मृत्यु भी होती रहती है। बाप तुमको काल पर जीत पहनाते हैं। वहां अकाले मृत्यु होता ही नहीं। बाप तुमको ऐसा बनाते हैं तो तुम 21 जन्म कब रोगी नहीं बनेंगे। तो ऐसे बाप से वर्सा लेना चाहिए ना। आत्मा को कितना समझदार बनना चाहिए। बाप हमको बेहद का वर्सा ऐसा देते हैं जहां कोई दुःख होता ही नहीं। तुम्हारा चिल्लाना करना बन्द हो जाता है। कुछ भी हो जाये रोने की बात नहीं। पार्ट–धारी हैं। एक शरीर छोड़ दूसरा लिया। यह बना बनाया ड्रामा है। बाबा ने कर्म–विकर्म की गति भी समझा(ई) है। कृष्ण की आत्मा अभी 84 जन्म भोग फिर अंत में वह ज्ञान सुन रही है। जो सुन रहे हैं उनको सुनाने वाला बना दिया है। गीता का खण्डन करने से सभी शास्त्र खण्डन हो गये हैं। यह शास्त्र आदि सभी हैं भक्तिमार्ग के। ज्ञान और भक्ति। ज्ञान है दिन। भक्ति है रात। दिन–रात किसका? ब्रह्मा के और ब्राह्मणों को। अभी तुम्हारा दिन होने का है। महाशिवरात्रि कहते हैं ना। रात्रि अर्थात् भक्तिमार्ग का अंत है। ज्ञान मार्ग शुरू होता है। रात है असुरों की, दिन है देवताओं का। अभी है संगम

अभी फिर से स्वर्गवासी बन रहे हो। वह अंधियारे रात में भक्तिमार्ग में धक्के खाते रहते हैं। टिपर भी घिसती जाती है। पैसे भी ख़लास हो जाते हैं। बाप कहते हैं मीठे बच्चों अभी मैं आया हूं तुमको शान्तिधाम सुखधाम ले जाने लिए। तुम सुखधाम के रहवासी थे। फिर 84 जन्मों के बाद दुःखधाम में आकर पड़े हो। पुकारते हो बाबा आओ इस पुरानी दुनियां में। यह तुम्हारी दुनियां तो नहीं है। अभी तुम क्या–2 कर रहे हो। योगबल से अपनी दुनियां स्थापन कर रहे हो। कहा भी जाता है अंहिसा परमो देवी'–देवता धर्म। तुमको अहिंसक बना(बनना) है। न काम कटारी चलानी है ना, लड़ना–झगड़ना है। बाप कहते हैं मैं हर 5000 वर्ष बाद आता हूं। यह कल्प है ही 5000 वर्ष का। लाखों वर्ष की बात ही नहीं। फिर तो यहां बहुत आदमशुमारी होती। कितनी गपोड़े लगाते हैं; इसलिए बाप कहते हैं यह यज्ञ ,तप–दान–पुण्य आदि करते तुमने दुर्गति को पाया है। ज्ञान से सद्गति, भक्ति से दुर्गति कहा जाता है। कोई को सीधा कहो तो बिगड़ पड़ेंगे। पत्थर मारने लग पड़ेंगे। यह गांधी सिखला कर गये हैं। कितना तंग करते हैं। तो मनुष्य देखो कितना घोर–अंधियारे में है। कुम्भकरण के नींद में सोये पड़े हैं जो जगते ही नहीं; इसलिए बाप कहते हैं मैं कल्प–2 आता हूं। मेरा भी ड्रामा में पार्ट है। पार्ट बिगर मैं कुछ भी नहीं कर सकता हूं। मैं भी ड्रामा के बन्धन में हूं। पूरे टाइम पर आता है। ड्रामा के प्लैन अनुसार मैं तुम बच्चों को वापस ले जाता हूं। अभी कहता हूं मनमनाभव ; परन्तु इनका भी अर्थ कोई समझते नहीं। बाप कहते हैं देह के सभी सम्बन्ध को छोड़ मामेकं याद करो तो पावन बन जावेंगे। बच्चे मेहनत करते रहते हैं बाप को याद करने की। यह है इश्वरीय विश्व–विद्यालय। सारे विश्व को सद्गति देने वाला। दूसरा कोई ईश्वरीय विश्व–विद्यालय हो न सके। ईश्वर बाप खुद आकर सारे विश्व को चेंज करते हैं। हेल से हेवन बना देते हैं। जिस पर तुम राज्य करते हो। अभी बाप कहते हैं मुझे याद करो तो सतोप्रधान बन जावेंगे। तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान कैसे बनते हो यह बेहद का बाप ही समझाते हैं। यह है भाग्यशाली रथ जिसमें बाप आकर प्रवेश करते हैं। शिव जयन्ति को कोई भी जानते नहीं। वह तो कह देते परमात्मा नाम–रूप से न्यारा है। अरे, नाम–रूप से न्यारा तो कोई चीज़ होती ही नहीं। यह आकाश है। नाम है ना, है तो कुछ भी नहीं। फिर भी नाम तो है ना। उनका भी कल्याणकारी नाम है। फिर भक्तिमार्ग में बहुत नाम रखे हैं। बबूलनाथ भी कहते हैं ; क्योंकि वह आकर काम कटारी से छुड़ाये पावन बनाते हैं। भक्तिमार्ग में तो बहुत करते हैं। उनका निवृत्तिमार्ग ही अलग है। वह ब्रह्म को मानते हैं, उनको ही याद करते हैं। ब्रह्म योग तत्व योगी। वह तो हो गया रहने का स्थान, जिसको ब्रह्माण्ड कहा जाता है। वह फिर ब्रह्मा को भगवान समझ लेते हैं। समझते हैं हम लीन हो जावेंगे। गोया आत्मा को मार्टिबुल बना देते हैं। बाप कहते हैं मैं ही आकर सर्व की सद्गति करता हूं ; इसलिए एक शिवबाबा की ही जयन्ति ह(ी)रे तुल्य है बाकी और सभी की जयन्तियां कौड़ी तुल्य हैं। शिवबाबा ही सर्व की सद्गति करते हैं तो यह है हीरे जैसा।फिर तुमको गोल्डेन एज में ले जाते हैं। तुम्हारा भी यह जन्म हीरे जैसा है। फिर गोल्डेन एज में आते हो। यह नॉलेज तुमको बाप ही आकर पढ़ाते हैं। जिससे तुम देवता बनते हो। फिर यह नॉलेज प्रायःलोप हो जाती है। इन ल.ना. में रचता और रचना की नॉलेज नहीं है। बच्चों ने गीत सुना। कहते हैं ऐसी जगह ले चलो जहां शान्ति चैन हो। वह है शान्तिधाम। फिर सुखधाम। वहां अकाले मृत्यु नहीं होती। ऐसे स्वर्ग के लिए भी क्या–2 बातें लिख देते हैं। स्वर्ग में ऐसी बातें हो कैसे सकतीं? भगवान को भी ठिक्कर–भित्तर में कह गाली देते हैं। तो खुद ही पत्थर बुद्धि बन पड़े हैं फिर बाप आकर पत्थर–भित्तर बुद्धि से पारस बुद्धि बनाते हैं। अच्छा, मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमॉर्निंग। मीठे–2 सिकीलधे बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते। हेलो, सर्व सेन्टर निवासी ब्राह्मण कुल भूषणों प्रति मधुबन निवासियों की मधुर प्यार भरी याद स्वीकर हो। शिवबाबा याद है? ओमशांति।